सत्य और अर्थपूर्ण जीवन की खोज करने वालों के लिए

मृत्युंजय ख्रिस्त

लेमेन्स इवैंजलिकल फैलोशिप इंटरनेशनल, मार्च-अप्रैल 2021

यीशु ही बचा सकता है

"वे अन्य दो को भी जो अपराधी थे उसके साथ मृत्यु-दण्ड देने के लिए ले जा रहे थे।" (लूका 23:32)

यीशु के साथ दो अन्य लोगों को क्रूस पर चढ़ाये जाने के लिए ले जा रहे थे। वे दो डाकू थे। यीशु उनके बीच सूली पर लटक रहा था। यीशु को चोरों में गिना गया था। वह स्वर्ग से एक सांसारिक घर में और एक स्त्री की कोख में आया था। परमेश्वर के लिए इस तरह से नीचे आना आसान नहीं है। एक शिशु के रूप में, वह शक्तिशाली हत्यारों द्वारा शिकार किया गया था। उन्हें उनसे भागकर मिस्र जाना पड़ा। जैसे-जैसे वह बड़ा हुआ, वह पापी प्रवृत्ति वाले बच्चों के बीच बढ़ रहा था। बारह वर्ष की आयु में, वह मंदिर में आत्मा की बातों पर चर्चा कर रहा था। उम्र में बढ़ते, उसे उन भाइयों के साथ रहना पड़ा जो उस पर विश्वास नहीं करते थे। उसे अपने माता-पिता को यह सिखाना पड़ा कि राज्य की ज़रूरतें पहले आती है।

तब सेवकाई में उन्होंने बारह शिष्यों को अपने पीछे चलने के लिए बुलाया।

.....यीशु ही बचा.. पृष्ठ 2 पर

आत्मिक उन्नति के लिए देखना न भूलें।

परमेश्वर की चुनौती

TV - Star Utsav

चैनल पर

हर रविवारसुबह 7:30 से 8:00 बजे

धर्मी जीवन जीना

'हे याकूब के घराने के प्रधानों, हे इस्राएल के घराने के शासको, तुम जो न्याय से घृणा करते और सीधी और सरल बातों को तोड़ते-मरोड़ते हो, सुनो।' (मीका 3:9)

आदमी के दिल में स्वार्थ और पाप, उस पड़ाव तक पहुँचा है कि बहुत लोग धार्मिकता एंव सही और गलत के बीच का उचित अंतर, पहचानने से घृणा और नफरत करते हैं। मगर बाइबल का परमेश्वर, जो जीवित है, वह धर्मी और सच्चा परमेश्वर है। वह न्याय करने वाला परमेश्वर है। इसलिए उनकी नज़रों में और उनके पवित्र वचन के सामने, सारे कामों, विचारों और सारे उद्देश्यों और गुप्त इच्छाओं को परखा जाएगा। हर आदमी चाहे वह उच्च हो या नीचा, सबको सुनिश्चित तरीके से जाँचा जाएगा। हर एक का, जैसे का तैसा न्याय होगा।

व्यवहारिक बात है कि जब कोई माँ या बाप कुछ पैसे या संपत्ति छोड़कर चल बसे, तो हर बेटे की सहज प्रवृत्ति यही है कि जहाँ तक हो सके वे अपने हिस्से का भाग हाँसिल कर लें। उन में से, अगर किसी का बहुत बड़ा परिवार हो या किसी भाई की आमदनी कम हो, उस माहौल में उन भाई बहनों के बीच इन विषयों का कोई, महत्व नहीं होता। 'यह उसकी अपनी गलती है। जब पिताजी ने उसे पढ़ने का मौका दिया तो उसे मेहनत से पढ़ना चाहिए था। कम से कम उसे एक अच्छी नौकरी तो मिलती', वे कहते हैं। सगे भाई के प्रति इतने कठोर और निर्दयी बातें!

अब जीवित परमेश्वर यों कहते हैं, 'क्यों तुम धर्मी और न्यायी नहीं ठहर सकते? थोड़ा अधिक उपज देने वाला खेत, क्या तुम अपने भाई को नहीं दे सकते? जब पैसों की और धन-संपत्ति की बात आती है, तो क्या तुम उतनी बुराई से पेश आते हो?' मगर लोग न्याय से घृणा करते हैं।

पढ़ाई और सांस्कृतिक उन्नति की बड़ी-बड़ी बातों के बावजूद मैंने यह पाया कि संसार के कई स्थानों में, आदमी पक्षपाती और गलत पूर्वधारणाओं से भरे हैं। कौम और जातिवाद से भरा उनका नज़रिया बहुत संकीर्ण है। निष्पक्ष और न्याय संगत व्यवहार, उनके लिए मुश्किल का काम हो जाता है। चाहे वह किसी परिवार में जमीन-जायदाद के बँटवारे की बात हो या अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर राजनीति की बात, यह बात सच है। स्वलाभ, स्वार्थ और तरफदारी ने उनकी समझ को धुंधला किया है।

आजकल लगता है कि संसार के कई भागों में, न्याय की उन्नति और निष्पक्ष, न्यायपूर्ण उद्देश्यों का समर्थन करना - अब अदालतों का लक्ष्य नहीं रहा। वकीलों पर दबाव डाला जाता है कि वे सरकार के चुनिंदे सामाजिक योजनाओं और ऐसी कार्यवाहियों का समर्थन करें जिस में वह सरकार दिलचस्पी रखती है। इस तरह आम आदमी अपने मौलिक अधिकारों से वंचित है। मेहनत करने वाले व्यक्ति का, यह मानना उचित है कि उनका गलत फायदा उठाया जा रहा है। एक धर्मी व्यक्ति का उनके प्रति घृणा और लापरवाही का एहसास भी उचित है। स्वच्छ मन, सत्य और न्याय के विरुद्ध झुकाव प्रबल होने का यही सब कारण है।

आदमी के अन्यायी और अनैतिक काम, जीवित परमेश्वर को बाध्य या डरा नहीं सकते। हरेक व्यक्ति को परमेश्वर के सामने इस भौतक शरीर में किए गए हर काम का लेखा-जोखा देना होगा। उनके सामने अधर्म

को बेदाग नहीं पेश किया जा सकता। परमेश्वर के उच्च न्यायलय के सामने, झूठ और असत्य कभी नज़रअंदाज नहीं किया जाएगा। वे सिर्फ आपकी आत्मा को धिक्कारेंगे और नरक की आग के योग्य ठहरायेंगे।

बहुत लोग नहीं जानते कि धार्मिकता में, न्याय विमर्श सहज और अंतर्निहित है। यानि कि धार्मिकता और न्यायविमर्श साथ-साथ चलते हैं। स्पष्ट कहें, तो जब उजियाला हो जाए, सब कुछ जो छिपाया जाना चाहिए, छिपाए या जिसे देखने का साहस लोग नहीं कर पाए उसे ढकना। दिन के उजियाले में चोर डकैती नहीं डालता। हत्यारा, हत्या नहीं करता। या फिर आतंकवादी अपनी अगली मुठभेड़ के बारे में खुलेआम बैठकर चर्चा नहीं करते। सूरज उगने से पहले वे भाग जाते हैं।

प्रभु यीशु मसीह जो धार्मिकता का सूर्य है, उदय होगा। जब वो आपकी जिंदगी में आते हैं, तो पाप को भागना होगा। हर दुष्ट उद्देश्य, हर बेईमान इच्छा, अशुद्ध कार्य, समलैंगिक या लैंगिक उदण्ड का अंत किया जाना होगा। अपने दिल में पाप छिपाए रखना असंभव होगा।

बहुत लोग यह विश्वास करते हैं कि अधर्म, असत्य, घूस और दुष्टता का ज़रूर प्रतिफल मिलता है। थोड़े समय तक, हालाँकि जीवित परमेश्वर ने अपने महान दीर्घधीरज से उनको समय दे।

मगर यह संभव नहीं कि किसी परिवार या लोगों का समूह, जो दुष्ट है, असत्य फैलाते हैं और बेलिहाज़ के काम करते हैं, वे बहुत देर तक उन्नति कर पाए। उनका पतन निश्चित है उनका पतन पक्का होगा।

कई लोग इस साधारण बात का ध्यान नहीं रखते कि जो वे बोते हैं, वही वे काटेंगे। आप जंगली बीज बोकर अच्छे गेहूं की जोरदार फसल काटने की आशा नहीं कर सकते।

लोगों से प्यार करना, उनके लिए प्रार्थना करना और उनके ऊपर से भारी बोझ हटाना, एक पादरी का यह काम है। लेकिन, अगर वह बहुत खाने-पीने और पैसा खर्च करने का आदी हो जाए, तो वह जल्दी ही पैसों का और ज्यादा लालच करने लगेगा। वास्तव में एक पादरी को पैसों से क्या काम? पैसे ज्यादा हों तो उसको लेकर चिन्ता ज्यादा होगी।

कोई भी पादरी सिर्फ इसलिए प्रचार करे कि उसे पैसे दिया जा रहे हैं? कोई भी प्रचारक या नबी, परमेश्वर का प्रतिनिधि है। पैसे या नकदी, वह माध्यम नहीं जिसके ज़रिये वे काम करें या कुछ स्थापित करे। वह प्रार्थना और परमेश्वर से सामर्थ है जिसके बल पर आप लोगों का विश्वास टिके।

आपके बैंक में करोड़ों रुपये हों, तो उससे क्या होगा? क्या उससे आपकी प्रार्थना और शक्तिशाली बनती है? उसके विपरीत आप वस्तुओं का अर्जन और सांसारिकता में डूब जाओगे। पादरी जो पैसों के लिए प्रचार करते हैं वे लोगों के लिए शाप का कारण बनेंगे। एक सच्चे मसीही पादरी के लिए एक बटुआ, उसकी सोच में आखरी चीज़ हो। यह सच है कि मुश्किल दिन ज़रूर आयेंगे। मगर प्रभु जो चिड़ियों का रखवाला है आपको नहीं भूलेंगे। अपने बचपन से ही मैंने अपने मां-बाप को पैसों की कदर किये बिना चलते देखा है। सेवा करने के बाद, मुझे मालूम है कि यही एक मात्र रास्ता है जिस से एक सच्चा मसीही सेवक, कार्य कर सकता है।

'हाय! हम कैसे पतन और दुर्भाग्य के दिनों में जी रहे हैं जब पादरी पैसों के लिए प्रचार करता है। और नबी पैसों के लिए नबूवत करता है।' प्रिय पाठक, ली हुई घूस को वापस करके आप अपने इर्दगिर्द एक आध्यातमिक संचन शुरु कर सकते हो। और परमेश्वर के वचन से अपने विवेक को धोकर शुद्ध कर सकते हो। प्रभु यीशु मसीह अपनी शांति धार्मिकता और सामर्थ से आपको सम्पन्न करेंगे। आपके चारों तरफ अधर्म के काम करने वाले भय से थरथरायेंगे।

जब परमेश्वर का आत्मा आप में काम करेगा, तब सही और गलत को जाँचने का प्रबल सामर्थ आप में होगा। न्याय के आत्मा से घृणा करने के बदले, हम उसे अपनाकर चलेंगे क्योंकि उसके बिना हम ठोकर खाकर गिर पड़ेंगे।

.... यीशु ही बचा... पृष्ठ 1 से

उनमें से कुछ का उग्र स्वभाव था। एक था जल्दबाजी पतरस, यहूदा इस्कारियोती एक पाखंडी, थोमा जो शकमिज़ाजी था और इस तरह अन्य चेले भी थे। उन्हें फरीसियों के दिए रात्रिभोज को स्वीकार करना पड़ा जो स्व-नीति और पाप से भरे थे। वे अपने आप को दीन और नीचे कर रहे थे। यहाँ तक कि उन्होंने ज़क्कई के घर में प्रवेश किया, जहाँ धन के प्यार का प्रभाव बहुत था। अब क्रूस पर वह चोरों के साथ था, दोनों तरफ एक एक - इस तरह पूरी तरह से पापियों के साथ खुद को पहचाना। वह इसी उद्देश्य से इस दुनिया में आया था।

वह मनुष्यों के भ्रष्ट स्वभाव के संपर्क में आया। उसने सबसे आम लोगों के साथ निवास किया। नरक मन में है- जहाँ बुरे विचार हैं और जहाँ पवित्रता के लिए कोई प्यार या इच्छा नहीं है। संत और स्वर्गदूत हमारे बीच नहीं रह सकते, ऐसे लोग जिनका मन नरक में बसता है। उनके लिए यह कठिन बात और पीड़ा सहने जैसा है। मसीह दीन हो, नीचे, नीचे आया, और अब क्रूस पर वह पूरी तरह से पापियों के साथ पहचाना गया है। उसने बरअब्बा खूनी की जगह ली। पापियों और अपराधियों की समस्याओं को जानने, वे इस दुनिया में आये। "क्योंकि हमारा ऐसा महायाजक नहीं जो हमारी निर्बलताओं में हम से सहानुभूति न रख सके। वह तो सब बातों में हमारे ही समान

ALLAHABAD : Beautiful Books, 194A, Old Mumford Ganj,Pin Code-211 002, Uttar Pradesh, Ph.0532- 2642872.
BANSI : Eton English Medium School,Chitaunakothi,Siddharth Nagar Dt, Pin Code-272 153, Uttar Pradesh, ph.05545-255002
CHENNAI : LEF Head Quarter, 9-B, Nungambakkam High Road, Chennai, 600 034, 044-2827 2393
MUMBAI : Beautiful Books, Lal Building, Goa Street, Near GPO, CST, Pin Code.400001, Ph.022-56334763/ 25008840
GANGTOK : Beautiful Books, P.B.No.94,31A, National Highway, Below High Court, Sikkim, Pin Code.737101 Ph.03592-228733
SHILLONG : Beautiful Books, P.B.No.39, Nongrimbah Road, Laitumkarh,Pin Code.793003, 0364-2501355

परखा गया, फिर भी निष्पाप निकला।"(इब्रानियों 4:15)

यीशु ने हमारे पापों को अपने ऊपर ले लिया। ... उन्होंने मनुष्य की सारी विषैली प्रकृति को अपने में समाहित कर लिया। वह हमारे बीच में आया और खुद को एक अपराधी की मौत का शिकार बनाया। वे डाकू यीशु को देख रहे थे। उसने उन पर पश्चाताप करने के लिए दबाव नहीं डाला। उनमें से एक बचाया गया और एक नष्ट हो गया। हमारी सहमति और इच्छा के बिना, यीशु अपने धन्य उद्धार को हम पर लागू नहीं करेगा।

यीशु हमारे पापी स्वभाव को कब्र में दफन करने के लिए नीचे ले गया और अब वह फिर नहीं दिखेगा। वह तुम्हारे और मेरे लिए मर गया। यशायाह 53:12, "इसलिए मैं उसे महान लोगों के साथ भाग दूंगा, और वह सामर्थियों के संग लूट को बांट लेगा, क्योंकि उसने अपना प्राण मृत्यु के लिए उण्डेल दिया, वह अपराधियों के संग गिना गया; फिर भी उसने बहुतों के पाप का बोझ स्वयं उठा लिया और अपराधियों के लिए विनती की।" उनकी गिनती अपराधियों में की गई। हमारे पाप ने उसे मृत्यु की मजदूरी दी। उसकी मृत्यु हो गई। लेकिन हमारे लिए उम्मीद है। वह हमारे बारे में सब जानता है और हमें बचा सकता है। - एन. डानिएल।

पुनरुत्थान द्वारा आश्वासन

लगभग सौ साल पहले की बात है। एडिनबर्ग नामक शहर में रॉबर्ट फ्लकार्ट नाम का जाना-माना व्यक्ति था। हालाँकि वे अभिषिक्त प्रचारक तो न थे, मगर पैंतालीस साल से भी ज्यादा समय से, लगातार वे हर रात खुले मैदान में सुसमाचार का प्रचार करते रहे। एक रात, (रोमियों 4:25) - 'वह हमारे अपराधों के कारण पकड़वाया गया और हमारे धर्मी ठहराए जाने के लिए जिलाया भी गया।', इस वाक्य पर बात करते समय, अपने उपदेश का खुलासा करने के लिए निम्नलिखित कहानी का दृष्टांत दिया।

'मेरी एक बूआ मर गयी थी। और अपनी वसीयत में मेरे लिए बहुत बड़ी रकम छोड़ गई थी। मगर उस वसीयत के खिलाफ रिश्तेदारों ने दावा किया और मुझे कुछ नहीं मिला। एक और अवसर पर, मेरे एक पुरान संडे-स्कूल छात्र ने मुझे अपनी जेल की कोठरी पर आकर उसके साथ प्रार्थना करने की माँग की। उसने सुसमाचार को स्वीकार नहीं किया था। वह मृत्यु दण्ड की सजा पाए था। आँखों में आँसू लिए उसने कहा, 'मिस्टर फ्लकार्ट, इस दुनिया में मेरे लिए आप ही एक अच्छे मित्र हो। मैं अपनी सारी संपत्ति आप के लिए छोड़ रहा हूँ।' फिर भी, उस नवजवान की मृत्यु नहीं हुई, उसे क्षमा कर दिया गाया। और दुबारा मुझे कुछ नहीं मिला।

'मगर अब प्यारे मित्रों, इन सब से बढ़कर एक और कहानी सुनाना चाहता हूँ। परमेश्वर का पुत्र, प्रभु यीशु मसीह जो सब से सर्वदा मेरा अच्छा मित्र है - कलवरी के क्रूस पर मेरे लिए मरा है और अनन्त जीवन की वसीयत मेरे लिए छोड़ी है। और तीसरे दिन जी उठा ताकि वह अनन्त जीवन मुझे निश्चत ही मिले। प्रभु की स्तुति हो। हाँ, मसीह की मृत्यु, हमारे अपराधों के लिए अदायगी है, जबकि उनका पुरुत्थान हमारे उद्धार का आश्वासन है।'

- चुनी हुई।

विजय मिली

चीन में ईसाई मिशनरी, रोजालिंड गोफ़ोर्थ ने यीशु मसीह में, पाप पर कैसे विजय पाई, निम्नलिखित यह वृत्तांत है।

मुझे वह समय याद नहीं है जब मैंने अपने उद्धारकर्ता के रूप में प्रभु यीशु मसीह को कुछ हद तक प्यार नहीं किया हो। बारह साल की उम्र से पहले ही, एक बेदारी की सभा में, मैंने सब के सामने मसीह को अपने प्रभु और स्वामी के रूप में स्वीकार किया था।

उस समय से मेरे दिल में मसीह को और अधिक वास्तविक रूप से जानने की गहरी लालसा पैदा हुई। क्योंकि वह मुझ से इतना दूर, अवास्तविक, और दूरदर्शी लग रहा था। एक रात मैं अपने माता-पिता के बगीचे में पेड़ों के नीचे चल फिर रही थी। और तारों से झिलमिल आकाश में देख रही थी। तब छोटी ही उम्र की थी और मैं ने मसीह को अपने पास महसूस करने की तीव्र लालसा महसूस की। परमेश्वर के साथ अकेले, मैं ने वहाँ घास पर घुटने टेक दिए। जैसे ही मैं ने वैसा किया, मानो अय्यूब का रोना मेरा हो गया, "काश मैं जानता कि वह कहाँ मिलेगा!" इससे पहले कि मेरी यह लालसा तृप्त की जाए, लगभग चालीस साल बीत जाएंगे- अगर यह बात मुझे तब पता चला होता, तो ओह! क्या मैं उसे सहन कर पाती?

मसीह को जानने की लालसा के साथ, मुझ में सचमुच उनको "खोजने" की और उनकी सेवा करने की एक उत्साहिक इच्छा पैदा हुई। लेकिन, ओह, कितना भयानक स्वभाव था मेरा! - भावुक, गर्व और स्व-इच्छा से भरा। वास्तव में मैं उन चीजों से पूर्ण भरी हुई थी जो मुझे पता था कि वे मसीह के विपरीत हैं।

बाद के वर्षों में, पापमय अहम के साथ आधे-अधूरे संघर्ष, यह चीन में हमारे मिशनरी काम के पांचवें साल तक जारी था। मुझे यह कहते हुए दुःख होता है कि एक विदेशी भूमि में नये जीवन का, उसका कष्टतर वातावरण, भड़काने वाले नौकरों और पूरी तरह से परेशान करने वाली परिस्थितियों के साथ, ऐसा प्रतीत हुआ था कि मेरा सहज स्वभाव वश में आने के बजाय वह और विकसित हुआ है।

एक दिन शाम को (मैं इसे कभी नहीं भूल सकती), जैसे मैं घर के अंदर खिड़की के पास बैठी थी, दूसरी तरफ दो चीनी ईसाई महिलाएँ नीचे बैठी थीं। वे मेरे बारे में बात करने लगी, और मैंने सुन लिया।(यह गलत बात है, कोई शक नहीं।) एक ने कहा, "हाँ, वह एक मेहनती कार्यकर्ता है, जोशीली उपदेशक है, और हाँ, वह हमें बहुत प्यार करती है; लेकिन, ओह, उसका क्या स्वभाव है! जितना वह उपदेश देती है काश वह उतना ज्यादा उसके अनुसार जी पाती!"

फिर मेरे जीवन और चरित्र का पूर्ण और सच्चा चित्रण मेरे सामने आया। वास्तव में वह बिलकुल सच था। वह परिसीमन सभी तरह की चिढ़ और झुंझलाहट को मिटाकर मानो मुझे धूल के गुबार में लाकर छोड़ दिया है। तब मैंने देखा कि, मसीह का प्रचार करने मेरा चीन में आना और मसीह की तरह न जी पाना, कितना बेकार या बेकार

से भी बदतर है। मगर मसीह को कैसे जी सकती थी? मेरे प्यारे पति सहित मैं कुछ ऐसे लोगों को जानती थी, जिनके पास एक शांति और एक शक्ति थी - हाँ, एक ऐसी चीज जिसका बखान नहीं कर सकती थी - वह मेरे पास नहीं था; और अक्सर मैं उसका रहस्य जानने के लिए तरसती थी।

मेरे जैसे स्वभाव के साथ, क्या कभी यह संभव है कि मैं धीरज से भरी और कोमल बन सकती हूँ?

क्या यह संभव है कि मैं कभी चिंता करना सचमुच बंद कर सकती हूँ?

एक शब्द में, क्या कभी मैं आशा कर सकती हूँ कि मसीह को जीने में सक्षम होने के साथ मैं उसका प्रचार भी कर सकूं?

मुझे पता था कि मैं मसीह से प्यार करती थी; और बार-बार मैं यह सिद्ध कर चुकी कि उसके खातिर अपना सर्वस्व न्यौछावर करने के लिए मैं हमेशा तैयार हूँ। लेकिन मैं यह भी जानती थी कि चीनी लोगों के साथ, या चीनी लोगों के सामने बच्चों के प्रति, मेरे स्वभावानुसार एक दफा आपा खो जाना- मोटे तौर पर हफ्तों, शायद महीनों तक की हुई आत्म-बलिदान की सेवा, नाकाम में बदल जाएगी।

आगे के वर्षों में, अक्सर आग की भट्टी के माध्यम से निकलने जैसा था। प्रभु को पता था कि आग के अलावा और कुछ भी नहीं जो मेरी हठी इच्छा और मल को नष्ट कर सकता है। उन वर्षों को इस एक पंक्ति में सम्मिलित किया जा सकता है: "लड़ना [ढूंढना नहीं], पीछा करना, रखना, संघर्ष करना। और हाँ, असफल होना!" कभी-कभी तो इन विफलताओं के कारण निराशा की गहराई में पहुंच जाना; फिर अपना सर्वश्रेष्ठ प्रयत्न करने की ठान लिए दृढ़-निश्चय करना - और मेरा वह सर्वश्रेष्ठ प्रयत्न कितना अहम दर्जे का था!

वर्ष 1905 में, और बाद के सालों में भी, मैं ने देखा कि जिस तरह से परमेश्वर मेरे पति की अगुवाई कर रहे थे। और उनके जीवन और संदेश में पवित्र आत्मा की शक्ति को देखा था। फिर मैं ने भी निश्चित रूप से पवित्र आत्मा की पूर्णता को तलाश करना शुरू किया। वह गहरे रूप से दिल को जांचने का समय था। पाप का घिनौनापन, इससे पहले कभी इस तरह मुझे प्रकट नहीं हुआ था।

मनुष्य और परमेश्वर के प्रति, कई चीजों को सही किये जाने की जरूरत थी। "कीमत चुकाने" का क्या मतलब है मैंने सीखा था। वे कई अद्भुत पर्वतारोही अनुभवों का समय था। और मैं पवित्र आत्मा का सम्मान करने और नए तरीके से पाप पर काबू पाने के लिए उनकी शक्ति की तलाश करने लगी थी। लेकिन मसीह अभी भी पहले की तरह ही दूर लग रहे थे। मैं उनको जानने और खोजने के लिए बेचैन थी। यद्यपि मेरे अभ्यस्त पापों के ऊपर काबू की शक्ति अधिक थी, फिर भी बहुत अंधकारमय और पराजय का समय भी था।

यह इन बाद के सालों में से एक समय की बात है। जून 1916 में, मजबूरन हमें कनाडा लौटना पड़ा। मेरे पति के अस्वास्थ्य ने उन्हें सार्वजनिक सभाओं में, बोलने में बाधा डाला था। और ऐसा लग रहा था कि हम दोनों की तरफ से यह जिम्मेवारी मुझ पर गिरी है। लेकिन कुछ आध्यात्मिक उत्थान के बिना घरेलू-चर्च का सामना करने से मैं घबरा गई - अपने लिए एक नए दर्शन का मुझ पर प्रकाशन। प्रभु ने इस दिल की भूख को देखा, और अपने स्वयं के महिमान्वित तरीकों से उन्होंने इस वचन को सचमुच पूरा किया, "क्योंकि वह अभिलाषी जीव को सन्तुष्ट करता है और भूखे को उत्तम पदार्थों से तृप्त करता है।" (भजन संहिता 107: 9)

ओंटारियो के नयाग्रा-ऑन-द-लेक, जून के उत्तरार्ध में वहाँ एक आध्यात्मिक सम्मेलन आयोजित किया जाना था। और वहाँ जाने मुझे अगुवाई मिली थी। एक दिन मैं अपने झुकाव के खिलाफ बैठक में गई, क्योंकि यह सुंदर झील के किनारे, पेड़ों के नीचे बहुत प्यारी जगह थी। उपदेशक मेरे लिए एक अजनबी था। लेकिन लगभग पहले से ही उसके संदेश ने मुझे जकड़ लिया- पाप पर विजय! क्यों, यह वही बात थी जिसके लिए मैं लड़ाई लड़ रही थी, जीवन भर भूखी थी! क्या यह संभव है?

प्रचारक ने बहुत ही साधारण ईसाई जीवन के अनुभव का वर्णन किया - कभी-कभी परमेश्वर के दर्शन के साथ पर्वतों के ऊपर; तब फिर से शिथिलता आ जाएगी, और दृष्टि का मंद होना, शीतलता, हतोत्साह और शायद निश्चित अवज्ञा और अधोगामी अनुभव का समय। तब शायद दुःख, या यहाँ तक कि कुछ विशेष दया, पथिक को उसके प्रभु में वापस लाएगी।

उपदेशक ने उन सभी को हाथ ऊपर करने के लिए कहा, जिन्होंने यही सब, अपने-ही अनुभव की एक तस्वीर महसूस की है। मैं आगे की सीट पर बैठी थी और शर्म ने मुझे तुरन्त अपना हाथ बढ़ाने से रोक दिया। लेकिन मेरे लिए जो सभी चीजें परमेश्वर के पास हैं उन सब को मैं पाना चाहती थी, और मैंने सच्चा रहने का दृढ़ संकल्प किया; और काफी संघर्ष के बाद मैंने अपना हाथ उठाया। आश्चर्यसहित सोच रही थी कि क्या दूसरे लोग भी मेरी तरह होंगे, तो मैंने पीछे मुड़कर देखी। फिर देखा कि कई हाथ ऊपर उठे हुए थे। हालांकि दर्शकों की भीड़ लगभग पूरी तरह से ईसाई कार्यकर्ताओं, मंत्रियों और मिशनरियों की थी।

उस नेता ने फिर कहा कि जिस जीवन का उसने वर्णन किया है वह वह जीवन नहीं है जिसे परमेश्वर ने अपने बच्चों के लिए योजना बनाई थी या कामना की थी। उन्होंने शक्ति तथा शांति का उच्च जीवन, प्रभु में आराम; संघर्ष, चिंता, परवाह से स्वतंत्रता का वर्णन किया। जैसे कि मैं सुन रही थी, मैं विश्वास न कर पा रही थी कि यह सच हो सकता है। फिर भी मेरी आत्मा पूरी तरह से हिल गयी। बड़ी मुश्किल से मैं अपनी भावनाओं को नियंत्रित कर पाई। मैंने तब हालांकि मंद-मंद यह देखा कि मैं उस लक्ष्य के पास पहुँच रही हूँ, जिसके

सत्य की परख!

"प्रेम इस में नहीं कि हम ने परमेश्वर से प्रेम किया, परन्तु इस में है कि उसने हम से प्रेम किया और हमारे पापों के प्रायश्चित (क्रोध-सहते बलिदान) के लिए अपने पुत्र को भेजा।" (1 यूहन्ना 4:10)

"हे सब थके और बोझ से दबे लोग, मेरे पास आओ: मैं तुम्हें विश्राम दूंगा। मेरा जुआ अपने ऊपर उठा लो और मुझ से सीखो, क्योंकि मैं नम्र और मन में दीन हूं, और तुम अपने मन में विश्राम पाओगे।"- यीशु मसीह (मत्ती 11:28,29)

लिए मैं जीवन भर आशा करती रही।

अगले दिन सुबह, तुरंत मैं अपने घुटनों पर बैठ मनन करने लगी। प्रार्थना करते हुए, विजयी जीवन के सभी मार्ग जो कि एक छोटे से पत्रक में दिए गए थे, बहुत सावधानी से उन सब बातों पर ध्यान किया। परमेश्वर का वचन कितना साफ था कि वह अपने बच्चों के लिए हार नहीं बल्कि जीत उनकी इच्छा है। यह देखना कितना आराम और ताकत देती है। और यह देखने के लिए कि उन्होंने कैसा शानदार प्रावधान किया है! बाद के दिनों में, स्पष्ट प्रकाश आया। मैंने वही किया जो मुझे करने के लिए कहा गया था - बहुत पहले मैंने प्रभु यीशु को, पाप के दंड से बचाने, अपने उद्धारकर्ता के रूप में उसे स्वीकार किया था। पर अब मैंने मौन लेकिन निश्चित रूप से मसीह को, पाप की शक्ति से छुड़ाने अपने उद्धारकर्ता के रूप में उन्हें स्वीकार कर लिया। और मैंने उस पर स्थिर आराम किया।

मैं नयाग्रा छोड़कर चली गई। हालांकि एहसास हुआ कि अभी भी कुछ ऐसा था जो मेरे पास नहीं है। वह अंधे आदमी ने जो महसूस किया होगा जब उसने कहा था, "मैं लोगों को देखता हूं परन्तू वे मुझे चलते-फिरते पेड़ों के समान दिखाई देते है।" ठीक मैंने भी उसी तरह महसूस किया। मैं ने भी प्रकाश देखना शुरू कर दिया था, मगर मंद-मंद।

घर पहुँचने के अगले दिन मैंने एक छोटी सी पुस्तिका 'द लाइफ दैट विन्स' लिया, जो मैंने पहले नहीं पढ़ी थी। और अपने बेटे के बिस्तर पर बैठ, मैंने उसे बताया कि यह उस सज्जन की व्यक्तिगत गवाही है जिसे परमेश्वर ने, मेरे अपने जीवन में बहुत बड़ा आशीर्वाद लाने केलिए उपयोग किया। मैंने तब तक उसे जोर से पढ़ा जब तक कि मैं उन शब्दों तक नहीं आई, "आखिरकार मुझे एहसास हुआ कि यीशु मसीह वास्तव में और सचमुच मेरे भीतर निवास है।" मैं हैरान रह गई। मानो सूरज अचानक एक बादल के आड़े से निकल आकर मेरी पूरी आत्मा को रोशनी से भर रहा है। मैं कितनी अंधी रह चुकी थी! मैंने जीत के अंतिम रहस्य को देखा - वह केवल यीशु मसीह है। - उनका अपना जीवन विश्वासियों में व्यतीत होता था। मसीह की अपने अन्दर उपस्थिति को महसूस करने की अकथनीय खुशी में, उस जीत के बारे में जो सोचा वह खो गया था! एक थके-मांदे भटकती, खोई हुई इनसान को आखिरकार घर मिल गया और मैं ने उन्हीं में विश्राम किया। उनके प्रेम में विश्राम किया — स्वयं यीशु मसीह में। और, ओह, शांति और आनंद का मेरे जीवन में आई वह बाढ़! एक विश्राम और आत्मा की प्रशांतता, बहुत सहज रूप से मुझे अपने कब्जे में ले लिया- मैंने कभी नहीं सोचा था कि वह मेरा हो सकता है। सचमुच मेरे लिए, या मेरे अन्दर एक नया जीवन शुरू हुआ। यह सिर्फ "मसीह जो मुझ में जीवित है।"

इस नए जीवन में पहला कदम जो मैंने लिया वह केवल परमेश्वर के अपने वचन पर खड़ा होना था। न कि मनुष्य के शिक्षण पर या यहाँ तक कि अपनी व्यक्तिगत अनुभव पर भी नहीं। और जैसे कि मैंने विशेष रूप से, परमेश्वर का अपने अन्दर वास, पाप पर विजय, और परमेश्वर के भरपूर प्रावधान के सत्य का अध्ययन किया, वह वचन नए प्रकाश के साथ मुझ पर काफी प्रबल था।

जो वर्ष बीत चुके हैं वे यीशु मसीह के साथ धन्य संगति और उनकी सेवा में आनंद के वर्ष थे। अभी कुछ समय पहले एक मित्र ने मुझसे पूछा था कि क्या मैं 1916 में, मेरे द्वारा कहे गए अपने जीवन के परिणाम को एक वाक्य में संक्षिप्त कह सकती हूं ? और मैंने उत्तर दिया, "हाँ, यह सब एक शब्द में सम्मिलित हो सकता है- 'विश्राम।'"

कुछ लोगों ने पूछा, "लेकिन क्या आपने कभी पाप नहीं किया है?" हाँ, यह कहते हुए मुझे खेद है। पाप एक ऐसी चीज है जिसे मैं घृणा करती हूं - क्योंकि यह एक ऐसी चीज है, जो अगर पश्चताप करके नहीं छोड़ना है तो न केवल मसीह से बल्कि उसकी उपस्थिति की चेतना से भी हमें अलग करता है। लेकिन मैंने यह भी सीखा है कि तात्कालिक क्षमा और बहाली पाने का अवसर हमेशा उपस्थित है। निराशा के समय की जरूरत नहीं है।

इस जीवन के धन्य परिणामों में, मसीह की उपस्थिति की चेतना ही नहीं बल्कि उनकी वास्तविक मौजूदगी है। उनकी वास्तविक उपस्थिति का तब निश्चित परिणामों में प्रकट होता है जब दैनिक जीवन के मामलों को उन्हीं के पास छोड़ दिया जाता है और वे उनको निपटा लेते हैं।

मेरा अपना विचार खूबसूरती से स्पर्जन के शब्दों में व्यक्त किया गया है:

हाथ, सारंगी को क्या है,
सांस, बांसुरी को क्या है,
माँ, बच्चे के लिए क्या है,
मार्गदर्शक, पथहीन जंगल में क्या है,
परेशान लहर के लिए तेल क्या है,
एक गुलाम को फिरौती क्या है,
मधुमक्खी के लिए फूल क्या है,
यीशु मसीह, मेरे लिए वह है।

- "रोजालिंड गोफोर्थ- हौव ऐ नो गॉड़ आन्सर्स प्रेयर्स: द पर्सनल टेस्टिमोनी ऑफ वन लइफ टइम (1921)" में प्रकाशित।

रोमियों अध्याय 8

1 सो अब जो मसीह यीशु में हैं, उन पर दण्ड की आज्ञा नहीं: क्योंकि वे शरीर के अनुसार नहीं वरन आत्मा के अनुसार चलते हैं।

2 क्योंकि जीवन की आत्मा की व्यवस्था ने मसीह यीशु में मुझे पाप की, और मृत्यु की व्यवस्था से स्वतंत्र कर दिया।

3 क्योंकि जो काम व्यवस्था शरीर के कारण दुर्बल होकर न कर सकी, उस को परमेश्वर ने किया, अर्थात अपने ही पुत्र को पापमय शरीर की समानता में, और पाप के बलिदान होने के लिये भेजकर, शरीर में पाप पर दण्ड की आज्ञा दी।

4 इसलिये कि व्यवस्था की विधि हम में जो शरीर के अनुसार नहीं वरन आत्मा के अनुसार चलते हैं, पूरी की जाए।

5 क्योंकि शरीरिक व्यक्ति शरीर की बातों पर मन लगाते हैं; परन्तु आध्यात्मिक आत्मा की बातों पर मन लगाते हैं।

6 शरीर पर मन लगाना तो मृत्यु है, परन्तु आत्मा पर मन लगाना जीवन और शान्ति है।

7 क्योंकि शरीर पर मन लगाना तो परमेश्वर से बैर रखना है, क्योंकि न तो परमेश्वर की व्यवस्था के आधीन है, और न हो सकता है।

8 और जो शारीरिक दशा में है, वे परमेश्वर को प्रसन्न नहीं कर सकते।

9 परन्तु जब कि परमेश्वर का आत्मा तुम में बसता है, तो तुम शारीरिक दशा में नहीं, परन्तु आत्मिक दशा में हो। यदि किसी में मसीह का आत्मा नहीं तो वह उसका जन नहीं।

10 और यदि मसीह तुम में है, तो देह पाप के कारण मरी हुई है; परन्तु आत्मा धर्म के कारण जीवित है।

11 और यदि उसी का आत्मा जिस ने यीशु को मरे हुओं में से जिलाया तुम में बसा हुआ है; तो जिस ने मसीह को मरे हुओं में से जिलाया, वह तुम्हारी मरनहार देहों को भी अपने आत्मा के द्वारा जो तुम में बसा हुआ है जिलाएगा।

12 सो हे भाइयो, हम शरीर के कर्जदार नहीं, ताकि शरीर के अनुसार दिन काटें।

13 क्योंकि यदि तुम शरीर के अनुसार दिन काटोगे, तो मरोगे, यदि आत्मा से देह की क्रीयाओं को मारोगे, तो जीवित रहोगे।

14 इसलिये कि जितने लोग परमेश्वर के आत्मा के चलाए चलते हैं, वे ही परमेश्वर के पुत्र हैं।